Experiment :

Date

Page No. 1

(Main Disability (MR) Special School

मानसिक विकलांगता

मानसिक विकलांगता (एमआर) एक व्यापक विकृति है, जो 18 वर्ष की आयु से पहले दो या दो से अधिक रूपांतरित व्यवहारों में और महत्वपूर्ण रूप से संज्ञानात्मक प्रक्रिया के विकार और न्यूनता के रूप में दिखता है। ऐतिहासिक रूप से इसे बौद्धिक क्षमता (आईक्यू) के 70 के भीतर होने के रूप में परिभाषित किया जाता है। कभी इसे लगभग पूरी तरह अनुभूति पर केन्द्रित माना जाता था, पर अब इसकी परिभाषा में मानसिक क्रियाकलाप से संबंधित एक घटक और अपने वातावरण में व्याप्ति के कार्यात्मक कौशल दोनों को शामिल किया जाता है।

संकेत तथा लक्षण

मानसिक विकलांगता वाले बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में बाद में बैठना, घुटनों के बल चलना और पैरों पर चलना या बोलना सीख पाते हैं। मानसिक विकलांगता वाले वयस्कों और बच्चों दोनों में निम्नलिखित विशेषताएँ देखी जा

CLASSTIME

सकती है:-

- मौखिक भाषा के विकास में देरी।
- स्मृति कौशल की न्यूनता।
- सामाजिक नियमों को सीखने में कठिनाई।
- स्वयं-सहायता या खुद अपनी देखभाल करने की क्षमता जैसे कौशल के अनुकूल व्यवहार के विकास में देरी।
- सामाजिक निषेध का अभाव।

संज्ञानात्मक कामकाज की सीमाएं मानसिक विकलांगता वाले बच्चे में एक सामान्य बच्चे की तुलना में धीमी गति से सीखने, सामाजिक कौशल विकसित होने का कारण बनती है। ये बच्चे भाषा सीखने, सामाजिक कौशल विकसित करने और अपने निजी जरूरतों जैसे कपड़ा पहनने या खाने जैसी जरूरतों का ज्यादा समय ले सकते है और वे सीखने में ज्यादा समय ले सकते हैं और पुनरावृत्ति की जरूरत होती है और उनके सीखने के स्तर दक्षता की जरूरत पड़ सकती है। फिर भी, वस्तुतः लगभग हर बच्चा

जरूरतों का ख्याल रखने में ज्यादा समय ले सकते हैं। व सीखने में ज्यादा समय ले सकते हैं और पुनरावृत्ति की जरूरत होती है और उनके सीखने के स्तर दक्षता की जरूरत पड़ सकती है। फिर भी, वस्तुत: लगभग हर बच्चा सीखने, विकसित होने और समुदाय में हिस्सा लेने वाला एक सदस्य बन जाता है।

बचपन के प्रारम्भ में हल्की मानसिक विकलांगता (आईक्यू 50-69) समझी नहीं जा सकती और जब तक कि बच्चे स्कूल नहीं जाते, इसकी पहचान नहीं हो सकती। यहां तक कि जब खराब शैक्षणिक प्रदर्शन की पहचान नहीं हो सकती। यहां तक कि जब खराब शैक्षणिक प्रदर्शन की पहचान कर ली जाती हो तो भी सीखने की क्षमता कम होने के आधार पर हल्की मानसिक विकलांगता और भावात्मक / व्यवहार संबंधी गड़बड़ियों का आकलन करने के लिए विशेषज्ञता की जरूरत पड़ सकती है। हल्की मानसिक विकलांगता वाले व्यक्ति जब वयस्क होते हैं तो उनमें से बहुत स्वतन्त्र रूप से रहने और लाभकारी रोजगार करने में सक्षम हो सकते हैं।

CLASSTIME

Experiment :

Date

Page No. 4

औसत मानसिक विकलांगता (आईक्यू 35-49) लगभग जीवन के पहले साल के भीतर स्पष्ट होती है। औसत मानसिक विकलांगता वाले बच्चो को विद्यालय, घर और समुदाय में काफी समर्थन की आवश्यकता होती है ताकि वे उन जगहों पर पूरी तरह से भागीदारी कर सकें। व्यस्क के रूप में वे एक सहायक सामूहिक घर में अपने मां-बाप के साथ रह सकते हैं या महत्वपूर्ण सहायक सेवाओं के जरिये उनकी मदद की जा सकती है, जैसे उनका वित्तीय प्रबंधन।

अधिक गंभीर मानसिक विकलांगता वाले व्यक्ति (उसके या उसकी) को पूरे जीवन काल तक और अधिक गहन समर्थन और निगरानी की आवश्यकता होगी।

CLASSTIME

Experiment :

Date

Page No. 5

निदान

डायग्नोस्टिक एंड स्टेटिकल मैन्युअल ऑफ मेंटल डिजआर्डर्स (डीएसएम IV) के नवीनतम अंक के मुताबित मानसिक विकलांगता की पहचान के लिए तीन तरह के मानदंडो को अपनाया जाना चाहिए। आईक्यू 70 से कम हो, दो या दो से अधिक क्षेत्रों में अनुकूलन व्यवहार (अनुकूलन व्यवहार की दर मापने वाले स्केल के मुताबिक, जैसे संचार, स्वयं सहायता कौशल, पारास्परिक कौशल और अधिक) और वह सबूत, जिससे 18 वर्ष की उम्र से पहले सीमाएं स्पष्ट हो जाये।

इसका औपचारिक रूप से बुद्धि और अनुकूलन व्यवहार के पेशेवर आकलन से पता लगाया जा सकता है।

बुद्धि 70 से नीचे

अंग्रेजी भाषा का पहला बुद्धि परीक्षण द तरमैन- बिनेट फ्रांस के बिनेट द्वारा उपलब्धि की क्षमता को मापने के लिए एक उपकरण के रूप में विकसित किया गया। टर्मन ने

CLASSTIME

Experiment :

Date

Page No. 6

इस परीक्षण का रूपांतरण किया और इसे मौखिक भाषा, शब्दावली, संख्यात्मक तर्क, स्मृति, मोटर की रफ्तार और विश्लेषण की क्षमता पर आधारित बौद्धिक क्षमता को मापने के एक साधन के रूप में स्थापित किया। इस तरीके से बुद्धि परीक्षण की संख्या 100 है, जिसमें एक मानक विचलन 15 (wais/wisc-IV) या 16 (बिनेट - स्टैनफोर्ड) है। उप औसत बुद्धि के मौजूद होने पर विचार तब किया जाता है, जब दो मानक विचलनों का व्यक्तिगत स्कोर परीक्षण के अंक से कम हो। संज्ञानात्मक क्षमता (अवसाद, चिंता आदि) के अलावा दूसरे कारणों से भी बुद्धि परीक्षण अंक कम हो सकता है। मूल्यांकन करने वाले के लिए यह महत्वपूर्ण है कि बुद्धि परीक्षण की माप "औसत से काफी नीचे" तय करने से पहले वह व्यक्ति को अलग करें।

मानक बुद्धि परीक्षण अंकों का आधारित निम्नलिखित श्रेणियां अमेरिकन एसोसियेशन ऑफ मेडिकन रिटार्डेशन, डायग्नोस्टिक एंड स्टेटिकल मैन्युअल ऑफ मेंटल डिजआर्डर्स -IV-टी आर और इंटरनेशनल क्लासीफिकेशन ऑफ डिसीजेज-10 पर आधारित है।

CLASSTIME

वर्ग	बुद्धि लब्धि
गहरी मानसिक विकलांगता	20 के नीचे
गम्भीर मानसिक विकलांगता	20-34
मध्यम मानसिक विकलांगता	35-49
हल्की मानसिक विकलांगता	50-69
औसत बौद्धिक कार्य	70-84

चूंकि रोग की पहचान केवल बुद्धि परीक्षण अंक पर ही आधारित नहीं है, इसलिए एक व्यक्ति के अनुकूल कार्य करने के लक्षणों को भी ध्यान में रखना चाहिए और रोग की पहचान कठोर रवैये के साथ नहीं होना चाहिए। इसमें बौद्धिक परीक्षण अंक, अनुकूल व्यवहार की दर मापने के स्केल के आधार पर निर्धारित अनुकूलित कार्य अंक शामिल होता है, जो व्यक्ति के क्रिया परिचित द्वारा प्रदान की गई क्षमताओं विवरण पर आधारित होती है। यह मूल्यांकन परीक्षक की राय पर भी आधारित होता, जो उसने सीधे उस व्यक्ति (पुरुष या महिला)

की समझ, बातचीत के माध्यम या पसंद वाली भाषा के जरिये बात कर हासिल की है।

अनुकूली व्यवहार की दो या अधिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सीमाएं

अनुकूलनशील व्यवहार या अनुकूली कार्य स्वतन्त्र रूप से रहने (या उम्र के न्यूनतम स्वीकार्य स्तर पर) के कौशल को दर्शाता है। अनुकूलित व्यवहार के आकलन के लिए पेशेवर व्यक्ति समान उम्र के अन्य बच्चों की कार्यात्मक क्षेमता की तुलना करते हैं। अनुकूलित व्यवहार के आलकन के लिए पेशेवर संरचनात्मक साक्षात्कार का उपयोग करते हैं, जिसके माध्यम से वे व्यक्ति के समुदाय में व्यवहार के बारे में उन लोगों से व्यवस्थित जानकारी हासिल करते हैं, जो उसे अच्छी तरह जानते हैं। अनुकूली व्यवहार को मापने के लिए कई स्केल हैं और किया के अनुकूल व्यवहार की गुणवत्ता का सटीक मूल्यांकन के सटीक आकलन के लिए नैदानिक निर्णय की आवश्यकता होती है। अनुकूली व्यवहार के लिए कुछ कौशल का होना।

महत्वपूर्ण है: जैसे :-

- दैनिक जीवनयापन का कौशल, जैसे कपड़े पहनना, बाथरूप का उपयोग और खुद खाना।
- बातचीत का कौशल, जैसे कपड़े पहनना जो कहा गया उसे उसने समझा और उनके अनुरूप जवाब देने में सक्षम होना।
- साथियों, परिवार के सदस्यों, दंपतियों, वयस्को व अन्य के साथ सामाजिक कौशल।

इस बात के सबूत हैं कि सीमाएं बचपन में ही स्पष्ट हो जाती है।

इस तीसरी स्थिति का उपयोग अल्जाइमर रोग या मस्तिष्क की क्षति के साथ गहरा आघात जैसे उन्माद की स्थितियों से अलग करने के लिए किया जाता है।

Experiment :

Date

Page No. 10

इतिहास

कई पारंपरिक अर्थों में लम्बा दिमागी दौरा दिमागी खामी के विविध स्तरों की ओर संकेत करता है, पर यह यूफेमिज्म ट्रेडमील (पांव चक्की) व्यंजना (कठोर बात को भी मधुरता से कहना) का विषय है। आम प्रयोग में वे दुरुपयोग के साधारण रूप हैं। उनकी मनोरोग की तकनीकी परिभाषा अब अप्रचलित है और उसका केवल विशुद्ध ऐतिहासिक महत्व ही है। उन्हे पुराने कागजात, जैसे किताबें, शैक्षणिक कागज़ात और जनगणना फार्म का भी सामना करना पड़ता है। (उदाहरण के लिए 1901 की ब्रिटिश जनगणना में एक कॉलम का शीर्षक था अल्पमति और कमजोर दिमाग वाला)

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कुछ पेशेवरों ने इन शब्दों के उपयोग को हतोत्साहित करने के प्रयास किये हैं। फिर भी इनका प्रयोग बना हुआ है। नीचे दिए गए शब्दों के अलावा, संक्षिप्त नाम (रिटार्ड) मंदबुद्धि या (टार्ड) अभी भी अपमान के रूप में एक सामान्य प्रयोग में है। 2003 में बीबीसी की ओर से कराये गये एक सर्वेक्षण में रिटार्ड शब्द को स्पैस्टिक (अमेरिका में इसे

CLASSTIME

आक्रामक नहीं माना जाता। और मोंग (आपत्तिजनक हरकतें करने वाला व्यक्ति) शब्दों की तुलना में विकलांगता सूचक शब्द को ज्यादा आक्रमक होने का दर्जा दिया गया।

• क्रेटिन (थायरॉयड संम्बंधी जन्मजात विकलांगता) सबसे पुराने और क्रिश्चियन के लिए फ्रांसीसी देसी शब्द के लिए प्रयोग किया जाता है। इसका निहितार्थ यह था कि इस तरह का हालत वाले व्यक्ति पाप करने के अयोग्य माने जाते है, इसलिए इन्हे "मसीह की तरह" माना गया है। 20 वीं सदी के मध्य तक इस शब्द का उपयोग वैज्ञानिक रूप से नहीं किया जाता था और आम तौर पर अपशब्द के रूप में माना गया; विशेष रूप से, 1964 में, 1964 मे बेकेट नाम की फिल्म मे ~~माना गया: विशेष रूप से~~। राजा हेनरी द्वितीय अपने बेटे व वारिस को "क्रेटिन" कहकर पुकारा। "क्रेटिनज्म" शब्द का जन्मजात हाइपोथायरायडिज्म के अर्थ वाले एक अप्रचलित शब्द के रूप में उपयोग किया गया, जिसमें कुछ हद तक मानसिक विकलांगता होती है।

Experiment :

Date

Page No. 12

- **मंदबुद्धि** का लंबा इतिहास रहा है, यह ज्यादातर पागलपन के साथ जुड़ा है। मंदबुद्धि और पागलपन के बीच अन्तर मूलतः इनकी शुरुआत के समय से आधार पर परिभाषित किया गया था। मंदबुद्धि का प्रयोग वैसे व्यक्ति के लिए किया जाता था, जिनके जीवन के प्रारंभिक काल में ही मानसिक कामकाज में खामी दिखने लगता है, जबकि पागलपन शब्द का उपयोग उन व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जिनमें वयस्क होने के बाद मानसिक कमियां विकसित होती है। 1890 के दशक के दौरान, मंदबुद्धि शब्द का प्रयोग उनके लिए किया जाता था, जो मानसिक कमियों के साथ पैदा हुए थे। 1912 तक मंदबुद्धि शब्द का वर्गीकरण बेवकूफ, हीन बुद्धि और कमजोर दिमाग वाले व्यक्तियों के लिए किया जाता था और यह पागलपन वाली से अलग था, जो बाद के जीवन-काल में दिखता है।

बेवकूफ बौद्धिक विकलांगता के सबसे ज्यादा स्तर के लिए इंगित किया जाता था, जहां मानसिक उम्र दो साल या कम की होती है और व्यक्ति सामान्य शारीरिक खतरों के खिलाफ खुद की सुरक्षा नहीं कर सकते। इस शब्द ने धीरे-धीरे

CLASSTIME

गहन मानसिक विकलांगता की जगह ले ली.

- **हीनबुद्धि** का संकेत एक बौद्धिक विकलांगता की ओर है, जो मूर्खता की तुलना में कम तीव्र है और कोई जरूरी नहीं कि वह वंशानुगत हो। अब यह आम तौर पर दो श्रेणियों में उप-विभाजित है: गंभीर मानसिक विकलांगता और सीमित मानसिक विकलांगता।

- हेनरी एच. गोडार्ड के प्रयासों से 1910 में अमेरिका एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ द फीबल माइंडेड द्वारा मोरोन (मूर्ख) शब्द को परिभाषित किया गया था और यह शब्द उन वयस्क व्यक्ति के लिए कहा गया, जिसकी मानसिक उम्र आठ से बारह वर्ष के बीच हो। इस स्थिति को अब हल्की मानसिक विकलांगता कहा जा रहा है। इन शब्दों की वैकल्पिक परिभाषाएं प्रयोग किये गये बुद्धि परीक्षणों पर आधारित है। ब्रिटेन में 1911 से 1959-1960 तक इस समूह को "कमजोर दिमाग" के रूप में संबोधित किया गया।

शब्दावली में परिवर्तन के साथ और पुराने शब्दों की स्वीकार्यता में नीचे की ओर रुख के साथ, सभी प्रकार की

CLASSTIME

की संस्थाओं को बार-बार अपना नाम बदलना पड़ा है। इसने स्कूलों, अस्पतालों, सोसाइटियों, सरकारी विभागों और शैक्षणिक पत्रिकाओं के नामों को प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए, मांइडलैंड इंस्टीच्यूट ऑफ मेंटल हैंडीकैप हुआ और अब इसका नाम ब्रिटिश इंस्टीच्यूट ऑफ लर्निंग डिजेबिलिटी हो गया है। इस घटना का संबंध मानसिक स्वास्थ्य और मोटर अक्षमता से है और यह संवेदी विकलांगता के छोटे स्तर के रूप में देखा जाता है।

मानसिक विकलांगता के लिए प्रयुक्त इन कई शब्दों के से जुड़े शायद नकारात्मक संकेतार्थ हालत के बारे में समाज के रवैये को प्रतिबिंबित करते हैं। समाज के तत्वों के बीच प्रतिस्पर्धी इच्छाएं दिखती हैं और कुछ तटस्थ चिकित्सा शब्द चाहते हैं तो कुछ दूसरों को अपमानित करने के हथियार के रूप में इसे इस्तेमाल करते हैं।

कारण

डाउन सिंड्रोम, घातक अल्कोहल सिंड्रोम और फर्जाइल एक्स सिंड्रोम ये तीन सबसे आम जन्मजात कारण होते हैं। हालांकि, डॉक्टरों को कई अन्य कारण भी मिले हैं। सबसे आम हैं:

आनुवांशिक स्थितियाँ :- विकलांगता कभी-कभी माता पिता से विरासत में मिले असामान्य जीन की वजह से, त्रुटिपूर्ण जीन गर्भबंधन या अन्य कारणों से भी होती है। सबसे अधिक प्रचलित आनुवांशिक स्थितियों में डाउन सिंड्रोम **क्लिनफेल्टर्स सिंड्रोम, फर्नाइल एक्स सिंड्रोम न्यूरोफाइब्रोमेटोसिस, जन्मजात हाइपोथायरायडिज्म, विलियम्स सिंड्रोम, फेनिलकेटोन्यूरिया (पीकेयू) और प्रैडर-विली सिंड्रोम शामिल** हैं। अन्य आनुवांशिक स्थितियों में शामिल हैं: फेलेन मैकडर्मिड सिंड्रोम (22क्यू 13 डीईएल), मोवेट-विल्सन सिंड्रोम, आनुवांशिक सिलियोपैथी और सिडेरियम टाइप एक्स से जुड़ी मानसिक विकलांगता (OMIM 300263) जो पीएचएफ 8 जीन में परिवर्तन के कारण होती है। OMIM 300560 कुछ दुर्लभ मामलों में, एक्स और वाई गुणसूत्रों में असामान्यताएँ विकलांगता का कारण बनती है। 48XXXX और 49 XXXX, XXXXX सिंड्रोम पूरी

CLASSTIME

दुनिया में छोटी संख्या में लड़कियों को प्रभावित करता है, जबकि लड़कों को 47xyy, 49 xxxxy या 49 xyyyy प्रभावित करता है।

- गर्भावस्था के दौरान समस्याएं, जब भ्रूण का विकास ठीक तरह से नहीं होता है तो मानसिक विकलांगता आ सकती है। उदाहरण के लिए,

भ्रूण कोशिकाओं के बढ़ने के समय जिस तरीके से उनका विभाजन होता होता है, उसमें समस्या हो सकती है। जो औरत शराब पीती है (देखें घातक अल्कोहल सिंड्रोम) या गर्भावस्था के दौरान रूबैला (एक वायरल रोग, जिसमें चेचक जैसे दाने निकलते हैं।) जैसे रोग से संक्रमित हो जाती है तो उसके बच्चे को मानसिक विकलांगता हो सकती है।

- जन्म के समय समस्याएं, प्रसव पीड़ा और जन्म के समय अगर बच्चे को लेकर समस्या हो, जैसे उसे पर्याप्त आक्सीजन नहीं मिले तो मस्तिष्क में खराबी के कारण उसमें (बच्चा या बच्ची) विकास की खामी हो सकती है।

- कुछ खास तरह के रोग या विषाक्तता। अगर चिकित्सा देखरेख में देरी हुई या अपर्याप्त चिकित्सा हुई तो काली खांसी, खसरा और

और दिमागी बुखार के कारण दिमागी विकलांगता पैदा हो सकती है। सीसा और पारे जैसी विषक्तता से ग्रसित होने से दिमाग की क्षमता कम हो सकती है।

आयोडीन की कमी, जो दुनिया भर में लगभग 20 लाख लोगों को प्रभावित कर रहा है, विकासशील देशों में निवारणीय मानसिक विकलांगता का बड़ा कारण बना हुआ है, जहां आयोडीन की कमी भी एक महामारी बन चुकी है। आयोडीन की कमी भी गण्डमाला का कारण बनती है, जिसमें थाइरॉयड की ग्रंथि बढ जाती है। पूर्ण रूप में क्रीटिनिज्म (थायरॉयड के कारण पैदा रोग) जिसे आयोडीन की ज्यादा आम है बुद्धि का थोड़ा नुकसान. दुनिया के कुछ क्षेत्र इसकी प्रकृतिक कमी और सरकारी निष्क्रियता के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं।

भारत में सबसे अधिक से 500 मिलियन लोग आयोडिन की कमी, 54 लाख लोग गंडमाला और 20 लाख लोग थायरॉइड से संबंधित रोग से पीड़ित हैं। आयोडीन की कमी से जूझ रहे अन्य प्रभावित देशों में चीन और कजाखस्तान ने व्यापक रूप से आयोडीन से सम्बद्ध कार्यक्रम चलाये, पर 2006 तक खस में इस तरह का कोई कार्यक्रम नहीं चलाया गया।

CLASSTIME

Experiment :

Date

Page No. 18

दुनिया के अकालग्रस्त हिस्सों, जैसे इथियोपिया में कुपोषण दिमाग के विकास में कमी का एक आम कारण है।

देखरेख

ज्यादातर परिभाषाओं के मुताबिक मानसिक विकलांगता बीमारी के बजाय सही तौर पर विकलांगता मानी जाती है। एमआर (मानसिक विकलांगता) मानसिक बीमारी के कई रूपों जैसे स्कीजोफ्रेनिया या अवसाद से अलग किया जा सकता है। वर्तमान में एक स्थापित विकलांगता का कोई "इलाज" नहीं है, हालांकि उचित समर्थन और शिक्षण के साथ ज्यादातर व्यक्ति कई बातें सीख सकते हैं।

पूरी दुनिया में हजारों एजेंसियां हैं जो विकासमूलक विकलांगताओं वाले लोगों के लिए सहायता प्रदान करती हैं। उनमें सरकार द्वारा चलाई जाने वाली, लाभ के लिए और बिना लाभ की निजी एजेंसियां शामिल हैं। एक एजेंसी में बहुत सारे विभाग शामिल हो सकते हैं, जिनमें पर्याप्त कर्मचारियों वाले आवासीय घर, दिन के पुनर्वास कार्यक्रम,

CLASSTIME

Experiment : Date ______ Page No. 19

जिसमें अनुमानित रूप से स्कूल, कार्यशालाएं हो सकती है, जिसमें विकलांग लोगों को रोजगार मिल सकता है, वैसे कार्यक्रम, जिनके जरिये विकासात्मक विकलांग लोगों की मदद के लिए समुदाय में काम मिल सकता हो, वैसे लोगों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम जिनके अपने अपार्टमेंट है और उसके माध्यम से विकासात्मक विकलांग लोगों की मदद कर सकते हो, वैसे कार्यक्रम, जिनसे उनके बच्चों की परवरिश में मदद की जा सकती हो और इसके अलावा बहुत कुछ हो सकता है। इसमें भी कई विकासात्मक विकलांग बच्चों के माता-पिता के लिए कई एजेंसियां और कार्यक्रम होते है।

इसके अलावा, कुछ विशेष कार्यक्रम हैं, जिसमें विकासात्मक विकलांग लोग बुनियादी जीवन कौशल सीखने के लिए भाग ले सकते हैं। इन "लक्ष्यों" को पूरी तरह कामयाब होने में काफी समय लग सकता है, लेकिन अन्तिम लक्ष्य स्वतन्त्रता है। यह स्वतन्त्रता दांत साफ करने से लेकर स्वतन्त्र रूप से रहने तक कुछ भी हो सकती है। विकासात्मक विकलांग लोग अपने पूरे जीवनकाल तक सीखना जारी रख सकते है

CLASSTIME

Experiment :

Date

Page No. 20

और यहां तक कि जीवन के आखिरी चरणों में अपने परिवारों, देखरेख करने वालों चिकित्सकों और इन लोगों के सभी प्रयासों में समन्वय लाने वालों की मदद से नये कौशल सीख सकते हैं।

यद्यपि मानसिक विकलांगता के लिए कोई विशेष चिकित्सा नहीं है, फिर भी विकासात्मक विकलांगों में चिकित्सा संबंधी जटिलताएं होती हैं और वे कई दवाएँ ले सकते हैं। उदाहरण के लिए विकासात्मक देरी वाले मेद बच्चों को एंटी-साइकोटिक्स या मनोदशा को स्थिर करने वाली दवाएं दी जा सकती हैं, ताकि व्यवहार को सामान्य रखा जा सके। मानसिक विकलांगता वाले लोगों में बेनोडा-ज़ोपिन के प्रयोग जैसी नशीली दवाओं के प्रयोग के बाद निगरानी और सतर्कता की जरूरत होती है, क्योंकि आम तौर पर इसके पार्श्व प्रभाव होते हैं, जिसे अक्सर व्यवहार संबंधी और मानसिक समस्या के रूप में गलत पहचान कर ली जाती है।

CLASSTIME